राष्ट्रीय पिछड़ा वर्ग वित्त एवं विकास निगम

क्लस्टर हेतु तकनीकी उन्नयन योजना-शिवसागर, असम

सफलता की कहानी

योजना का नाम	**क्लस्टर हेतु तकनीकी उन्नयन**
क्लस्टर का नाम	**हैण्डलूम**
सदस्यों की सं.	**75**
स्वीकृति का वर्ष	**2019-20**
वितरित अनुदान राशि	**रू. 38 लाख**
क्रियान्वयन एजेंसी	**भारतीय उद्यमिता संस्थान (IIE), गुवाहाटी**

राष्ट्रीय पिछड़ा वर्ग वित्त एवं विकास निगम (NBCFDC) ने अपनी योजना ''क्लस्टरों हेतु तकनीकी उन्नयन योजना'' के तहत हथकरघा बुनाई क्लस्टर की 75 महिला सदस्यों के लिए परियोजना को मंजूरी दी थी। उत्सुक बुनकरों को तकनीकी सहायता प्रदान करने के लिए वर्ष 2019-20 में जिला-शिवसागर, असम में भारतीय उद्यमिता संस्थान (IIE), गुवाहाटी के माध्यम से योजना को लागू किया गया था।

इस क्लस्टर के तहत चिन्हित 08 स्वयं सहायता समूहों जिनके नाम हैं- अंकुरन SHG, स्नेह बंधन SHG, ज्योति SHG, कल्पतरु SHG, नयन SHG, पाही SHG, भुवन SHG और दकीहोवपोरिया SHG के सदस्यों को व्यक्तिगत रूप से इस योजना के तहत NBCFDC ने आवश्यक उपकरण और सहायक उपकरण (जैक्वार्ड मशीन, लूम, फ्रेम और यार्न) के साथ 75 जैक्वार्ड लूम वितरित किए हैं।

इस प्रकार के उपायों के परिणामस्वरूप, इस इलाके में हथकरघा के क्षेत्र में महत्वपूर्ण सुधार देखा गया क्योंकि नए उपकरण ने पहले अपनाए गए बुनाई के तरीके की तुलना में कपड़े के एक विशेष टुकड़े की बुनाई के लिए आवश्यक समय को दक्षतापूर्वक कम कर दिया। आज, इनमें से लगभग 90% जैक्वार्ड हथकरघा पूरी तरह कार्यात्मक हैं क्योंकि बुनकर इसे अपनी आजीविका अर्जन के लिए पूर्णकालिक साधन के रूप में उपयोग करते हैं। 75 में से लगभग 60 बुनकर अपने बुनाई कौशल में काफी सुधार करने में सक्षम हुए हैं। अतः वे फिलहाल प्रति माह 500 "अंगौछा" (पारंपरिक तौलिये) तक के ऑर्डर की आपूर्ति कर प्रति माह रू. 8000/- तक की मासिक आय अर्जित कर रहे हैं और इसके साथ ग्राहक मांग को आकर्षित करने में सक्षम हुए हैं।

स्थानीय लोगों से ऐसे हथकरघा उत्पादों की निरंतर मांग ने बुनकरों को जिले में आयोजित स्थानीय एक्सपो में अपने काम को गर्व से प्रदर्शित करने के लिए प्रोत्साहित किया है। वे जोरहाट और गुवाहाटी जैसे असम के विभिन्न शहरों में दुकानों के साथ संबंध स्थापित करने में भी सक्षम रहे हैं, जो इन बुनकरों से नियमित रूप से हथकरघे से बुने हुए कपड़े मंगवाते हैं।

आज, क्लस्टर के बुनकर अत्यधिक समर्पण के साथ बुनाई जारी रखे हुए हैं। अपनी स्वयं की आजीविका की वित्तीय आवश्यकताओं को पूरा करने के अतिरिक्त वे पारंपरिक कपड़े बुनने की सदियों पुरानी परंपरा को बनाए रखने में योगदान करने में सक्षम रहे हैं, इस प्रकार असम के सांस्कृतिक गौरव को भी संरक्षित किया गया है।